अक्टूबर 2020
वर्ष 34
तृतीय अंक

सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

7 सम्पादकीय

विशेष स्तम्भ

9 समसामयिक सामान्य ज्ञान
13 आर्थिक परिदृश्य
17 राष्ट्रीय परिदृश्य
23 21वीं सदी की पहली शिक्षा नीति : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
26 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य
30 क्रीड़ा जगत्
33 विज्ञान समाचार
35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य
36 अनुप्रेरक युवा प्रतिभा
37 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
41 सारभूत तत्व कोष

लेख

44 ग्रामीण विकास लेख—रूर्बन मिशन : आत्मा गाँव की, सुविधाएं शहर की
45 संधि लेख—बोडोलैंड समझौता : शांति का रास्ता
47 समसामयिक लेख—एच-1 बी वीजा का मुद्दा : कारण और प्रभाव
49 अंतरिक्ष लेख—भारत का सबसे ताकतवर उपग्रह जीसैट-30 : आएगी इंटरनेट की दुनिया में क्रान्ति
50 जलवायु परिवर्तन लेख—वैश्विक तापमान वृद्धि से खेती को बचाने की दरकार
52 कॅरियर लेख—युवा रोजगार साधक से रोजगार प्रदाता बनें

हल प्रश्न-पत्र

57 एस.एस.सी. संयुक्त हायर सेकण्डरी लेवल (10+2) परीक्षा, 2018

आईबीपीएस पी.ओ./एम.टी. (प्रा.) परीक्षा, 2019

65 संख्यात्मक अभियोग्यता
69 तर्कशक्ति
72 English Language
75 छत्तीसगढ़ शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2019
85 उत्तर प्रदेश एसएसएससी कनिष्ठ सहायक परीक्षा, 2019
93 राजस्थान एस.एस.सी. कनिष्ठ अनुदेशक (वायरमैन) सीधी भर्ती परीक्षा, 2018
98 आगामी बिहार पुलिस प्रवर्तन उपनिरीक्षक परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
103 आगामी मध्य प्रदेश जेल प्रहरी (कार्यपालिक) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
108 आगामी राजस्थान पुलिस कॉंस्टेबिल भर्ती परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
116 आगामी दिल्ली पुलिस कॉंस्टेबिल भर्ती परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

विविध/सामान्य

122 वर्षांत समीक्षा 2019—पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
124 कॅरियर सलाह
127 क्या आप परिचित हैं ?
129 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. **–सम्पादक**

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

सम्पादकीय

सम्पन्न नहीं, सुखी बनने का प्रयत्न कीजिए

औरों को हँसते देखो मनु
हँसो और सुख पाओ,
अपने सुख को विस्मृत कर लो
सबको सुखी बनाओ
'सब' में तुम भी समाहित हो.

– कविवर जयशंकर प्रसाद

प्रजातन्त्र के सन्दर्भ में जॉन स्टुअर्ट मिल के इस मंतव्य ने विशेष आदर और स्थान प्राप्त किया कि प्रजातन्त्र का उद्देश्य सर्वाधिक जनों का सर्वाधिक सुख होना चाहिए. इसके आधार पर यह मान्यता स्वीकृत हुई कि सर्वाधिक विकसित राष्ट्र का अर्थ है कि इस देश के अधिकांश नागरिक खुश हों और सन्तोष का अनुभव करते हों.

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा जारी वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट 2020 के अनुसार उत्तरी यूरोप का एक छोटा-सा देश फिनलैण्ड विश्व का सर्वाधिक प्रसन्न देश है. इस रिपोर्ट में भारत 144वें स्थान पर है, जबकि पाकिस्तान 66वें स्थान पर है. सं.रा. अमरीका अठारहवें स्थान पर है.

सतही तौर पर निष्कर्ष यह है कि देश की भौतिक सम्पन्नता और आम नागरिक की प्रसन्नता के मध्य कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है. प्रजाजन को प्रसन्नता प्रदान करने वाला तत्व भौतिक सम्पत्ति न होकर कुछ और ही होता है.

अमरीका के नागरिक अपने जीवन से विशेष सन्तुष्ट नहीं हैं–यह बात प्रायः जगजाहिर है, क्योंकि बीटल्स, हिप्पी, वीटनिक्स आदि आन्दोलनों की जन्मभूमि अमरीका है, शान्ति की खोज में हजारों अमरीकी नागरिक भारत आते रहते हैं.

प्रश्न उठता है कि वे कौनसे जीवन-मूल्य हैं, जो वर्तमान आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीति के ऊहापोह के मध्य जीवन को इससे निरपेक्ष करते हैं और रससिक्त जिजीविषा को उत्प्रेरित करते रहते हैं. प्लेटो तथा उसके अनुयायी कहते हैं कि वही मनुष्य प्रसन्न है, जो किसी जीवनगत मूल्य सत्ता के प्रति समर्पित है अर्थात् सजग भी है और क्रियाशील भी है. यह क्रियाशीलता वैचारिक स्तर के साथ व्यावहारिक स्तर पर भी होती है.

न्यूनतम आवश्यकताओं की स्थिति प्रसन्न रहने की एक महत्वपूर्ण शर्त है. भारतीय मनीषी श्री जे. कृष्णमूर्ति ने अपने चिन्तन के अनुसार यह लिखा है कि वही मनुष्य सुखी है, जो कुछ नहीं है. यह वस्तुतः अहंकार के निराकरण का जीवन दर्शन है जिसका निर्वाह असम्भव प्रायः है. हाँ, इस बात को हम कुछ व्यावहारिक रूप देकर इस प्रकार कह सकते हैं–जो व्यक्ति कुछ नहीं चाहता है, उस पर सब कुछ है. जो व्यक्ति स्वर्ग की कामना नहीं करता है, वह वस्तुतः स्वर्ग में ही निवास करता है, भारत विकासशील देशों की पंक्ति में बांग्लादेश से आगे है.

सुप्रसिद्ध आर्थिक चिन्तक प्रो. जे. के. मेहता ने अपने 'थ्योरी ऑफ वान्टलेसनेस' में स्पष्ट किया सन्तुष्टि का वह स्तर उच्चतम होता है जहाँ व्यक्ति अपनी इच्छाओं/आवश्यकताओं को कम-से-कम कर देता है.

एक लोक कथा के अनुसार एक राजा अपने दरबारीजन को आज्ञा देता है कि वह किसी सुखी व्यक्ति को प्रस्तुत करें. वे एक ऐसे व्यक्ति के पास पहुँचते हैं, जो अपने आप में मस्त है, यानी अपनी व्यस्तताओं के मध्य जीवन के प्रति इतना रससिक्त मिलता है कि वह उपयोगिता मूलक जीवन मूल्यों के प्रति विरक्त या उदासीन रहता है. दरबारी बहुत-सा धन देकर उसकी कमीज एक रात के लिए उधार चाहते हैं. वह व्यक्ति उत्तर देता है–यदि मेरे पास एक भी कमीज होती तो में कोई मूल्य लिए बिना मैं तुम्हें वह खुशी से उधार देता. हम समझते हैं कि उक्त व्यक्ति के उत्तर में उसके खुशी होने का रहस्य प्रकट है. उपयोगिता निरपेक्ष चिन्तन में ही वस्तुतः सुखानुभूति समाविष्ट रहती है. भारत के आर्ष-ऋषियों ने इसी कारण उपयोगिता की बात न कहकर परमार्थ अथवा शिवत्व का प्रतिपादन किया है. इस चिन्तन पद्धति के समान विचार व्यक्त करते हुए पाश्चात्य विद्वान् नॉरमन विंसेट ने अपनी पुस्तक डिस्कवरी ऑफ हैप्पीनेस (Discovery of Happiness) में लिखा है कि सच्चे सुख की प्राप्ति तभी होती है जब मनुष्य किसी दूसरे के लिए ऐसा कार्य करता है जिसमें वह प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से लाभ प्राप्त न करता हो. भारतीय मनीषी इस कार्य व्यवहार-पद्धति को सेवा-भाव अथवा परमार्थ भावना द्वारा प्रेरित बताते आए हैं. दर्शन की भाषा में इसको निष्काम कर्म कहा जाता है. निस्पृह सेवा के उदाहरण हमारे इतिहास में भरे पड़े हैं. जीवन-व्यवहार में भी हम इस प्रकार के व्यवहार देखते रहते हैं जब लोग अभावग्रस्त व्यक्तियों की सेवा करते देखे जाते हैं. किसी याचक की भीख याचना स्वीकार करने वाला दानी कदाचित् ही यह बात मन में लाता होगा कि कभी मैं भी इसके द्वार पर जा सकता हूँ. प्याऊ लगाने वाले, धर्मार्थ औषधालय चलाने वाले, धर्मशालाएं, कुएं आदि बनवाने वाले समाज-सेवियों का अभाव न कभी रहा, न है और न होगा.

आज हमारे जीवन में उपयोगितावाद का बोलबाला है. हर व्यक्ति हर काम में लाभ-हानि का लेखा-जोखा करता हुआ देखा जाता है, जीवन की सम्पूर्ण प्रविधि प्रतिस्पर्द्धामूलक पद्धतियों को आधार मानकर चलती हुई दिखाई देती है. हम यह भी नहीं विचार कर पाते हैं कि प्रतिस्पर्द्धामूलक व्यवहार सफलता के साथ कितनी उपलब्धि कराता है ? विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले युवक-युवतियाँ जानते हैं कि वर्तमान में प्रतिस्पर्द्धा का युग है. हमारे विचार से उन्हें यह भी समझ लेना चाहिए कि प्रतियोगिता एवं प्रतिस्पर्द्धा के मध्य बहुत ही क्षीण विभाजक रेखा होती है. प्रतिस्पर्द्धा यदि ईर्ष्या रहित हो तो वह उचित है–वह प्रतियोगिता की सीमा में आ जाती है. हम अपनी सफलता चाहते हैं, परन्तु न किसी की हानि करना चाहते हैं और न कभी किसी की हानि करेंगे प्रतिस्पर्धा में ईर्ष्या एवं तज्जन्य हानि का भाव छिपा रहता है. इसी से इस सन्दर्भ प्रायः गला काट प्रतियोगिता Cut-throat competition शब्द का प्रयोग किया जाता है. हमारा युवावर्ग प्रतियोगिता में भाग लेते समय यदि सम्पन्न एवं समृद्ध व्यक्ति बनने की अपेक्षा सुखी मानव बनने का स्वप्न देखे तो हम समझते हैं हमारे राष्ट्र की समृद्धि व सुखी नागरिकों का निर्माण करने में वे सहायक होंगे. स्मरण रखें कि प्रतिस्पर्द्धा में मानसिक विकृतियों की दुर्गंध आना स्वाभाविक है. इसी तथ्य को एक वयोवृद्ध पत्रकार ने इस प्रकार व्यक्त किया है, ''प्रतिस्पर्द्धामूलक जीवन मूल्यों के प्रति विरक्ति की अभिव्यक्ति ही सुखी होने की अनिवार्य और अपरिहार्य शर्त है.'' हम जिस मात्रा में पराए काम आने की कामना करते हैं, उसी अनुपात में हम अपने जीवन का आदर करते हैं और उसी अनुपात में हमारी जीवनी शक्ति सघन और प्रबल हो जाती है. हम छोटे-से-छोटे अवसर का उपयोग सुखी होने में करें, हमारा जीवन और हमारा राष्ट्र सुखी मानवों से भर जाएगा. अंग्रेजी के प्रसिद्ध लेखक रस्किन के शब्दों में ''सुख सर्वत्र विद्यमान है, उसका स्रोत हमारे हृदयों में है.''

●●●